अमृत प्रार्थना
भगवान से (सुख की खोज)

हे प्रभु! हे अंतर्यामी! हम अनंत जन्मों से संसार सागर में भटक रहे हैं। हमें इसी में सुख प्रतीत हो रहा है। जैसे मृग को बाहर में जल दिखाई देता है, लेकिन उसके हाथ में जल नहीं आता बल्कि उसके प्राण चले जाते हैं। वैसे ही सुख की खोज में,इस संसार में अनंत जन्मों से भटक रहे हैं। लेकिन हमें सुख नहीं मिला। अब घोर अशांति हो गई है।

अब उस परम सुख और परम शांति को प्राप्त करना चाहते हैं। सुना है कि आप सर्वत्र व्याप्त हैं, लेकिन फिर भी हमारे हृदय में विराजमान हैं। अब मैं आपके पास आना चाहता हूँ, लेकिन अंदर में,भीतर कैसे प्रवेश करूं? दरवाजा तो आपने अंदर से बंद कर रखा है। मैंने आपके नाम का,आपके रूप का सहारा लिया है। मैं आपका आभार करता हूँ। आप मुझे भीतर आने का मार्ग दिखाएँ। भीतर का मार्ग प्रशस्त करें! मुझे परम सुख और परम शांति मिले!

ओम शांति शांति शांति!